Title: Demand for the creation of seperate Vidarbha State and need to set up Indian Institute of Medical Sciences at Nagpur instead of Nasik.

श्री विलास मुत्तेमवार (नागपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि विदर्भ प्रदेश जो लगातार उपेक्षा का एक क्षेत्र बन गया है और वहां की जनता अब इस अन्याय के खिलाफ अपना असंतोष प्रकट कर रही है तथा उन्होंने अलग विदर्भ राज्य की मांग की है जो सदन के सामने है। इस लगातार उपेक्षा के कई उदाहरण मैं आपके समक्ष दे सकता हूं।

विकास का कोई भी क्षेत्र हो, चाहे इर्रिगेशन की बात हो या इलैक्ट्रिसिटी की बात हो, हर मामले में विदर्भ की उपेक्षा हुई है। विदर्भ में विद्युत का उत्पादन होता है, लेकिन वहां के लोगों को अंधेरे में रहना पड़ता है। आज मैं जिस बात को लेकर आपके सामने सदन में न्याय मांगने के लिए खड़ा हुआ हूं, वह विदर्भ से ही संबंधित है। सन् १९८१ में महाराष्ट्र राज्य के तब के मुख्यमंत्री, श्री अन्तुले, ने महाराष्ट्र के विकास के लिए, विशेषकर विदर्भ के विकास के लिए ३३ बिन्दुओं का एक फार्मूला बनाया था। इसमें एक बिन्दू था कि नागपुर में इंडियन इन्स्टीचूट ऑफ मैडिकल साइंस के निर्माण का निर्णय। इसका समर्थन इनके बाद हर मुख्यमंत्री ने किया और हमारे विरोध पक्ष के नेता, श्री शरद पवार जी, ने भी इस इंस्टीचूट के नागपुर में बनाये जाने के निर्णय का हमेशा समर्थन किया था। लेकिन अब जो सरकार आई है, उसने इस निर्णय को नजरअन्दाज कर दिया है और अब इसको नासिक में स्थापित करने का निर्णय लिया है तथा इसका भूमिपूजन दस तारीख को हो रहा है। मैं सदन को बताना चाहता हूं, नागपुर में सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध हैं और नागपुर देश के मध्य भाग में स्थित है तथा ट्रांसपोर्ट व एकेडेमिक की दृष्टि से भी यह उचित और योग्य स्थान है। इस मांग को लेकर वहां सरकार के इस निर्णय के विरोध में यहाँ की जनता आन्दोलन कर रही है। इसलिए मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है, विदर्भ की जनता, विशेषकर नागपुर के साथ जो अन्याय हो रहा है, को न्याय दिलाने में हमारी मदद करें तथा प्रधान मंत्री जी से यह आग्रह है कि वे महाराष्ट्र सरकार ने इस विद्यापीठ को जो नासिक में लगाने का एबरप्टली निर्णय लिया है, उसके रोकने में हमारी मदद करें और विदर्भ के साथ इस तरह के अन्याय को आप रोकेंगे, ऐसी हम आपसे अपेक्षा करते हैं।